देवप्रतिमा एवं चित्रविधान

स्नातक पत्रोपाधि पाठ्यक्रम

2023-24

वास्तु विभाग

महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय

देवासमार्ग , उज्जैन (म.प्र.) 456010

अणुसङ्केत - regpsvvmp@rediffmail.com,

अन्तर्जालपुट - www.mpsvv.ac.in

महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)

देवप्रतिमा एवं चित्र विधान

स्नातक पत्रोपाधि पाठ्यक्रम

नियमावली

1. पाठ्यक्रम का उद्देश्य - प्रतिमाविज्ञान देवालय वास्तु का एक महत्त्वपूर्ण आयाम है। वास्तुग्रन्थों में मूर्तिकला के नियमों के साथ ही चित्रकर्म की भी चर्चा की गयी है। शास्त्रीय तथा पुरातत्त्वविज्ञान की दृष्टि से देवप्रतिमा एवं चित्रों की भारतीय ज्ञान परम्परा से छात्रों को जोड़ना, इस कार्यक्रम का उद्देश्य है।

2. प्रवेश नियम- एक वर्ष के इस पाठ्यक्रम में प्रवेश की अर्हता मध्यप्रदेश शासन द्वारा मान्यता प्राप्त बारहवीं कक्षा (12वीं) या तत्समकक्ष परीक्षा है।

3. परीक्षा योजना-

इस पाठ्यक्रम में चार प्रश्नपत्र होंगे, जिनमें से दो प्रश्नपत्र सैद्धान्तिक तथा दो प्रायोगिक होंगे। परीक्षा का माध्यम हिंदी होगा। परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए प्रतिप्रश्नपत्र 35% अङ्क अपेक्षित हैं।

प्रश्नपत्र क्रमाङ्क	विषय कोड	पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का नाम	पाठ्यक्रम क्रेडिट	प्रति सप्ताह अध्ययन घण्टे	अङ्क
प्रथम (सैद्धांतिक)		CC1	देववास्तु	3	3	100
द्वितीय (सैद्धांतिक)		CC2	प्रतिमा विज्ञान	3		100
तृतीय		CC3	प्रायोगिक	1	1	100
चतुर्थ		CC4	प्रायोगिक	1		100
			योग	8	4	400

ELIGIBILITY FOR EXAMINATION:

CONVERSION OF MARKS INTO GRADE AND GRADE POINT

Latter Grade	Grade Points	Description	Range of Marks (%)
O	10	Outstanding	90 - 100
A+	9	Excellent	80 - 89
A	8	Very Good	70 - 79
B+	7	Good	60 - 69
B	6	Above Average	50 - 59
C	5	Average	40 - 49
P	4	Pass	35 - 39
F	0	Fail	0 - 34
Ab	0	Absent	Absent

Division	Criterion
First Division with Distinction	The candidate has earned minimum number of credits required for the award of the degree in first attempt with CGPA of 8.00 or above.
First Division	The candidate has earned minimum number of credits required for the award of the degree with CGPA of 6.50 or above.
Second Division	The candidate has earned minimum number of credits required for the award of the degree with CGPA of 5.00 or above but less than 6.50 .
Pass Division	The candidate has earned minimum number of credits required for the award of the degree with CGPA of 4.00 or above but less than 5.00

Equivalent Percentage- CGPAX10

The Maximum Marks per paper is fixed at 100

(If it is less or more than 100, convert it into 100 for grading)

Cumulative Grade Point Average

Based on the grades obtained in all the subjects registered for by a student, his or her cumulative Grade point Average Semester Grade Point Average (SGPA), Yearly Grade point average (YGPA), and Cumulative Grade Point Average (CGPA) is calculated as follows:

$$\text{SGPA/YGPA/CGPA} = \frac{\Sigma \text{ (No. of credits * Grade Point)}}{\Sigma \text{ No. of Credits}}$$

SGPA/YGPA/CGPA is rounded off to the decimal Place.

4. उपलब्ध स्थान -

उक्त पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु उपलब्ध स्थान 10 निर्धारित हैं। प्रवेश के लिए उपलब्ध स्थानों पर राज्यशासन के नियमानुसार आरक्षण प्रदान किया जाएगा। अधिक प्रवेशार्थी होने की स्थिति में प्रत्येक सत्र में विश्वविद्यालय प्रशासन से स्थानवृद्धि की स्वीकृति प्राप्त करना अनिवार्य होगा।

5. शुल्क -

छात्रों का प्रवेश शुल्क, परीक्षा तथा अन्य विभिन्न गतिविधियों का शुल्क विश्वविद्यालय के सम्बन्धित अध्यादेश के प्रावधानों के अनुसार निर्धारित किया जाएगा, जिन्हें समय-समय पर आवश्यक होने पर संशोधित किया जा सकेगा।

स्नातक पत्रोपाधि पाठ्यक्रम

देवप्रतिमा एवं चित्र विधान

प्रथम प्रश्नपत्र

देववास्तु

पूर्णाङ्क 100

उद्देश्य एवं लाभ

- वास्तुशास्त्र का प्रामाणिक ज्ञान मिलेगा।
- देववास्तु एवं भारतीय मूर्तिकला का विशेष परिचय प्राप्त होगा।
- स्वरोजगार में सहायक।

इकाई 01	प्रतिष्ठा-पूर्वन्यास ध्वजा तथा पताका, कीर्तिस्तम्भ, ध्वजस्तम्भ, ध्वजामाहात्म्य प्रतिष्ठा, यज्ञमण्डप, कुण्ड विधिनिर्णय मण्डलविधि (सर्वतोभद्र, गौरीतिलक आदि मण्डल) रत्नन्यासप्रतिष्ठा- दिशानुसार रत्न, औषधि, धान्यादि का न्यास सूत्रधारपूजाविधि गुरुयागनिर्णय	20
इकाई 02	लिङ्गाधिकार शिवलिङ्गोत्पत्ति विविध लिङ्गार्चनविधि रत्नज लिङ्ग, अष्टलोहमय लिङ्ग, दारुलिङ्ग पाषाण शिवलिङ्ग का विन्यास एवं प्रकार, ब्राह्मादि भाग, बालचन्द्र, छत्रादि लिङ्गशीर्ष, लिङ्गपरीक्षा, लक्षणोद्धार, शत्रुमर्दन, वारुणादि विविध लिङ्गभेद शिवलिङ्गव्यक्ताव्यक्त, चतुर्मुखादि मुखलिङ्ग बाणलिङ्गोत्पत्ति, बाणलिङ्गभेद	20
इकाई 03	पीठप्रतिमाविधान पीठिकालक्षण नन्दीश्वर लक्षण प्रतिमा प्रमाण, प्रतिमालक्षण एकादश रुद्र निर्णय, दिक्पालादि विविधमूर्तिलक्षण	20

इकाई 04	विशिष्ट प्रतिमा प्रकार ब्रह्ममूर्ति, सूर्यादिनवग्रहमूर्ति विष्णुमूर्तिलक्षण, ऊर्ध्वासन-शयनप्रतिमा कार्तिकेयादि देवमूर्तिलक्षण दुर्गामूर्तिलक्षण, विविध देवीमूर्तिलक्षण जिनेन्द्रमूर्तिलक्षण	20
इकाई 05	चित्रविधान अष्टविध चित्रकर्म चित्रप्रतिमा तालनिर्णय, विविध मानप्रमाण पत्रजाति कण्टभेद, जीवसूत्रनिर्णय भूमिबन्ध पट्टपत्रवर्तनानिर्णय लेपकर्म, अण्डकालेखन चित्राभिधान, देव, असुर, कुब्ज, मनुष्यादि के विविध भेद स्त्रीपुरुषलक्षण चित्रकर्म में एकादश रस, ललितादि दृष्टिविधान	20

टीप:- प्रत्येक इकाई के पाठ्यसन्दर्भों का मानचित्रों द्वारा निरूपण भी अपेक्षित रहेगा।

अनुशंसित पुस्तकें :

1. अपराजितपृच्छा, डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू, परिमल संस्कृत ग्रंथमाला, दिल्ली, 2011
2. समराङ्गणसूत्रधार, सम्राट् भोजदेव, टीकाकार- डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी, 2017
3. मयमतम्- डॉ. शैलजा पाण्डेय, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2013
4. मयमतम्- डॉ. शैलजा पाण्डेय, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी, 2010
5. वृहत्संहिता- वराहमिहिर, टीकाकार अच्युतानन्द झा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2005

अङ्कविभाजन

प्रत्येक इकाई से निम्नलिखित व्यवस्थानुसार प्रश्न होंगे –

1 बहुविकल्पीयप्रश्न $2 \times 5 = 10$

2 लघूत्तरीयप्रश्न $6 \times 5 = 30$

3 दीर्घोत्तरीयप्रश्न $12 \times 5 = 60$

स्नातक पत्रोपाधि पाठ्यक्रम

देवप्रतिमा एवं चित्र विधान

द्वितीय प्रश्नपत्र

प्रतिमा विज्ञान

पूर्णाङ्क 100

उद्देश्य एवं लाभ

- वास्तुशास्त्र का प्रामाणिक ज्ञान मिलेगा।
- भारतीय प्रतिमा विज्ञान की प्राचीनता एवं महत्त्व का परिचय प्राप्त होगा।
- स्वरोजगार में सहायक।

इकाई 01	प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान- अ.1. कला की परिभाषा, कला एवं धर्म, कलासामग्री अ.2. सिन्धुघाटी कला, मौर्य एवं शुङ्गकालीन कला अ.3. कुषाणकालीन कला	20
इकाई 02	प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान- अ.4. गुप्तकालीन कला अ.5. ब्रह्माप्रतिमा, वैष्णव प्रतिमाएँ अ.6. शैव प्रतिमाएँ	20
इकाई 03	प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान- अ.7. देवी प्रतिमाएँ अ.8. सूर्य प्रतिमा अ.9. गणेश तथा अन्य देवों की प्रतिमाएँ अ.10. धातु प्रतिमा	20
इकाई 04	प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान- अ.11. बौद्ध मूर्तियों का उद्भव एवं विकास अ.12. जैन प्रतिमाएँ अ.13. वृहत्तर भारत में भारतीय प्रतिमाएँ	20

इकाई 05	प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान- परिशिष्ट- मूर्तिविज्ञान सम्बन्धी साहित्य, प्रतिमा स्थान, आसन, आयुध, वाद्य, पशु-पक्षी एवं जलजन्तु	20

टीप:- प्रत्येक इकाई के पाठ्यसन्दर्भों का मानचित्रों द्वारा निरूपण भी अपेक्षित रहेगा।

अनुशंसित पुस्तकें :

1. प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान- डॉ. वासुदेव उपाध्याय- चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी,1982

अङ्कविभाजन

प्रत्येक इकाई से निम्नलिखित व्यवस्थानुसार प्रश्न होंगे –

1 बहुविकल्पीयप्रश्न	2 × 5 = 10
2 लघूत्तरीयप्रश्न	6× 5 = 30
3 दीर्घोत्तरीयप्रश्न	12× 5 = 60

स्नातक पत्रोपाधि पाठ्यक्रम

देवप्रतिमा एवं चित्र विधान

तृतीय प्रश्नपत्र

देववास्तु से सम्बन्धित प्रायोगिक कार्य

इस प्रश्नपत्र में छात्र द्वारा अन्य प्रायोगिक कार्यों के अतिरिक्त न्यूनतम किसी एक देवालय का भ्रमण कर वहाँ की प्रतिमाओं का प्रायोगिक सर्वेक्षण कर प्रतिवेदन जमा कराना अनिवार्य होगा।

पूर्णाङ्क 100

स्नातक पत्रोपाधि पाठ्यक्रम

देवप्रतिमा एवं चित्र विधान

चतुर्थ प्रश्नपत्र

प्रतिमाविज्ञान से सम्बन्धित प्रायोगिक कार्य

इस प्रश्नपत्र में छात्र द्वारा अन्य प्रायोगिक कार्यों के अतिरिक्त न्यूनतम किसी एक पुरातत्त्व संग्रहालय का भ्रमण कर वहाँ की प्रतिमाओं का प्रायोगिक सर्वेक्षण कर प्रतिवेदन जमा कराना अनिवार्य होगा।

पूर्णाङ्क 100